सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ शेखर सी. माण्डे का सीएसआईआर-सीरी दौरा

देश का सबसे गतिशील और जीवंत शोध संगठन है सीएसआईआर : डॉ शेखर सी. माण्डे

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), नई दिल्ली के महानिदेशक एवं वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर), भारत सरकार, के सचिव डॉ. शेखर सी. माण्डे ने 11 नवंबर, 2018 को पिलानी स्थित सीएसआईआर की राष्ट्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-सीरी) का दौरा किया। इस दौरान डॉ. शेखर माण्डे ने संस्थान की शोध गतिविधियों का अवलोकन किया और सीरी के वैज्ञानिकों, तकनीकी व प्रशासनिक सहकर्मियों सहित परियोजना कर्मियों व विद्यार्थियों से चर्चा की। अपने सीरी आगमन के दौरान उन्होंने संस्थान के शोध क्षेत्रों (साइबर फिजिकल सिस्टम्स, स्मार्ट सेंसर्स और माइक्रोवेव डिवाइसेज़) की शोध सुविधाओं का भी अवलोकन किया। अपने सीरी दौरे के दौरान डॉ. माण्डे सभी सहकर्मियों से रू-ब-रू भी हुए। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिक, प्रशासनिक तथा तकनीकी सहकर्मी उपस्थित थे। संस्थान में आगमन पर प्रोफेसर शान्तनु चौधुरी, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने डॉ. माण्डे का स्वागत किया। उन्होंने महानिदेशक महोदय को सीएसआईआर-सीरी की शोध गतिविधियों के संबंध में अवगत कराया।

डॉ शेखर सी. माण्डे, महानिदेशक, सीएसआईआर का स्वागत करते हुए प्रोफेसर शान्तनु चौधुरी, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

संस्थान के सहकर्मियों को संबोधित करते हुए उन्होंने देश के विकास में सीएसआईआर की भूमिका को रेखांकित किया। अपने संबोधन में उन्होंने सीएसआईआर को अत्यंत जीवंत, सुदृढ़, गतिशील व महत्वपूर्ण संगठन बताते हुए कहा कि देश की आजादी से पूर्व स्थापित इस संगठन ने आरंभ से ही अपना योगदान न केवल देश के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक विकास में दिया है अपितु कृषि के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाने में सीएसआईआर का बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने बताया कि सीएसआईआर से देश की अपेक्षाएँ समय के अनुसार बदलती रही हैं। आजादी के समय अपेक्षाएँ अलग थीं और आज के दौर में अलग हैं। डॉ. माण्डे ने कहा कि सीएसआईआर ने सदैव स्वयं को देश की अपेक्षाओं के अनुसार ढाला है और हमेशा देश के जनमानस की आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य किया है। वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों के उद्योगों को हस्तांतरण के संबंध में संस्थान के वैज्ञानिकों से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना कार्य सही लगना स्वाभाविक है परंतु हमें एक उद्यमी के नज़रिए से स्वयं अपने कार्य का निष्पक्ष एवं ईमानदारी से मूल्यांकन करना चाहिए और उद्योगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करना चाहिए।

सभागार में सहकर्मियों को संबोधित करते हुए महानिदेशक महोदय

विज्ञान संग्रहालय में शोध कार्यों का अवलोकन करते हुए महानिदेशक महोदय

प्रयोगशाला में शोध कार्यों का अवलोकन करते हुए महानिदेशक महोदय

महानिदेशक महोदय को शोध कार्यों की जानकारी देते हुए वैज्ञानिक

एसीएसआईआर के कुलपति एवं संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ चंद्रशेखर से मिलते हुए महानिदेशक, सीएसआईआर

सीएसआईआर-सीरी की शोध सुविधाओं की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि उनका सीरी दौरा अत्यंत लाभदायक रहा है। सीएसआईआर प्रयोगशालाओं में उपलब्ध सुविधाएँ देश के अन्य शोध संगठनों सहित आईआईटी जैसे शिक्षण संस्था नों में नहीं हैं। उन्होंने इस अवसर पर सीएसआईआर प्रयोगशालाओं और आईआईटी सहित देश के शैक्षणिक संस्थानों की साझेदारी पर भी बल दिया। उन्होंने देश की बदलती ज़रूरतों के अनुसार सभी वैज्ञानिकों से अपने ज्ञान को निरंतर अद्यतन करने की आवश्यकता पर बल दिया और नए अनुसंधान कार्यों से देश की प्रगति में अपना योगदान देने का आह्वान किया।

इससे पूर्व सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. शेखर सी. माण्डे, व श्रीमती माण्डे ने संस्थान में पहुँचने पर पौधारोपण भी किया। श्रीमती माण्डे ने संस्थान परिसर के हरे-भरे वातावरण की प्रशंसा की। हिन्दी अधिकारी श्री रमेश बौरा ने महानिदेशक को संस्थान की हिन्दी विज्ञान पत्रिका 'इलेक्ट्रॉनिक दर्पण 2018' भेंट की। महानिदेशक महोदय ने पत्रिका की प्रशंसा करते हुए इसके प्रकाशन के लिए प्रोफेसर चौधुरी को बधाई दी।

डॉ. शेखर सी. माण्डे, महानिदेशक, सीएसआईआर को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए प्रोफेसर शान्तनु चौधुरी, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी

अंत में प्रोफेसर शान्तनु चौधुरी, निदेशक, सीएसआईआर-सीरी ने संस्थान की ओर से स्मृति चिह्न भेंट कर सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. शेखर सी. माण्डे का सम्मान किया। अत्यंत व्यस्तता के बावजूद सीएसआईआर-सीरी आगमन और शोध गतिविधियों के अवलोकन एवं संस्था न के सहकर्मियों से चर्चा के लिए महानिदेशक महोदय के प्रति आभार व्यक्त किया।

संस्थान के लॉन में पौधारोपण करते हुए डॉ. माण्डे तथा श्रीमती माण्डे

विज्ञान पत्रिका इलेक्ट्रॉनिक दर्पण 2018 की प्रति महानिदेशक को भेंट करते हुए श्री रमेश बौरा, हिन्दी अधिकारी